नज़राना

फ़िरोज़ अली

नज़राना

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-47-0

Price: ₹ 195.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

नज़राना

फिरोज़ अली

लेखक परिचय

लेखक फिरोज अली का जन्म पिता स्व0 सगीर हसन और माता श्रीमती अन्सारून निशा के यहाँ हुआ था। उनका विवाह श्रीमति शाहीना प्रवीन के साथ हुआ। उन्हें वर्तमान में सुपत्री फरहीन अली और सुपुत्र तौसीफ सेहर का सौभाग्य प्राप्त है। लेखक ने साहित्य और पत्रकारिता क्षेत्र में अध्ययन पूर्ण किया है। पारंपरिक शिक्षा में उन्हें बी.ए.(ऑनर्स), पी.जी. डिप्लोमा (जर्नलिज़म एण्ड मासकॉम) की डिग्री प्राप्त है। उन्होंने बहुत सी साहित्यिक रचनाएँ, जैसे कविताएँ और कहानियाँ लिखी हैं। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ हैं,

- ❖ विभागीय पत्रिका
  (i) अंकुर और (ii) एक संग–ए–मील का संम्पादन
- ❖ कहानियां और कवितायें

आगामी रचना :–

- ✓ "मेरे घर से"
- ✓ कविताओं और ग़ज़लों का संग्रह

प्रस्तावना

अर्ज़–व–इज़हार

प्रिय पाठकों! यह कहानी मेरे एक जवान की आप बीती है इसमें उसकी मर्जी के अनुसार रद्दो–बदल किया गया है। इस कहानी का जन्म मनुष्य की स्वयं की हीन–भावना से ग्रस्त होने और जिन्दगी के विशेष मोड पर दुनिया की भाग–दौड़ में पति–पत्नी का एक दूसरे को महत्व नहीं देने के कारण हुआ है। इन रिश्तों को महत्व देकर बिगडने से बचाया जा सकता है।

इस कहानी को आपके समक्ष प्रस्तुत करने में मोहनदास खोपडागडे, राजेश शर्मा, शैलेन्द्र खनका, सन्दीप शर्मा, विजय खटाना, मुरली कृष्णन, प्रताप चन्द्रन, सुरेश बालन, अनीष कुमार, किशोर कुमार, एन0 के0 बिस्ट और अनबीटेबल–64 समूह के मेरे सभी दोस्तों ने सहयोग किया है।

साथ ही इसे लिखने में मेरी पत्नी शाहीना का भरपूर सहयोग मिला है।

मैं अपने दोस्त अनुराग राज और अनूप कुमार का मशकूर हूँ जिन्होंने इसकी नोक–पलक सुधारने में मरी मदद की।

अन्त में Educreation Publishing की पूरी टीम धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इसे मन्जर–ए–आम तक लाने में मेरा साथ दिया।

बाकी फैसला आपके हाथ है कि मैं कहाँ तक कामयाब रहा अपनी कोशिश में।

"बस्तर" की वादियों को ही
मंजिल बना दिया।

कागज़ के टुकड़े जोड़े और
दिल बना दिया।

हैरान ना हो कोई यह,
"नज़राना" देखकर।

मोहसिन की याद में एक
नॉबेल बना दिया।

फिरोज़ अली

1

जालन्धर से अपनी बुनियादी प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद सुरक्षाबल की एक बटालियन सुकमा छत्तीसगढ़ में तैनात होने के लिए तैयार थी। बटालियन के सभी जवानों व उनके साज–व–सामान को सुकमा छत्तीसगढ़ पहुँचाने के लिए स्पेशल ट्रेन जालन्धर कैन्ट रेलवे स्टेशन से रायपुर के लिए बुक किया गया था – जो अपने गन्तव्य के लिए रवाना हो चुकी थी। जाने वाले सभी जवानों के मन में अजीब सी हलचल थी, उनके ज़ेहन में चलने वाली हलचल जायज थी क्योंकि छत्तीसगढ़ में व्याप्त नक्सलवाद की समस्या और वहाँ होने वाली प्रत्येक दिन की कार्यवाहियों से सभी जवान भलि भाँति अवगत थे।

ट्रेन में सभी जवान अपने कमाण्डर द्वारा दिए गये निर्देशों का पालन करते हुए अपनी निर्धारित सीट पर बैठ गए थे। रैंक और उम्र के अनुसार छोटी–छोटी टोलियों में बटकर सभी अलग–अलग तरीके से टाइम पास कर रहे थे।

कहीं राजनीति पर बातचीत चल रही थी, तो कहीं ताश खेले जा रहे थे। किसी ग्रुप ने गाना गाना शुरू किया था, तो कोई समूह मोबाइल पर गाने का आनन्द ले रहा था तो एक

विशेष ग्रुप रागिनी अलाप रहा था। ट्रेन एक के बाद दूसरे स्टेशन को पार करती हुई आगे बढ़ रही थी। किसी स्टेशन पर अगर रूकती भी तो थोडी देर के लिए क्योंकि स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ने वाला कोई दूसरा पैसेंजर नहीं होता था, वैसे ट्रेन में बैठे जवानों की छोटी छोटी टोलियों में चलने वाले कार्यक्रम निरन्तर चल रहे थे।

ट्रेन के बाहर स्टेशन पर खड़े लोगों की भीड़ को ऐसा लगता था मानों ये फौजी ईश्वर की ऐसी संरचना हैं जो हर प्रकार की खुशी व मस्ती अपने दामन में समेटे हुए हैं।

देखने वाले को कहीं से इस बात का एहसास नहीं हो रहा था कि, इन जवानों को भी कोई समस्या है और ये भी चिन्तित हो सकते हैं।

साबिर 06 साल पहले अर्थात् 2009 में इसी जालन्धर से अपनी बुनियादी प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद पास आउट हुआ था और एक बटालियन में अपनी सेवा प्रदान करने के बाद यहाँ इस नई बटालियन में बतौर फिजिकल इन्सट्रक्टर पोस्ट हुआ था। इस तरह जलन्धर की पोस्टिंग उसके लिए नयी नहीं थी।

यहाँ यह उसकी दूसरी पोस्टिंग थी और अब वह भी इस बटालियन के साथ सुकमा छत्तीसगढ में एन्टी नक्सल आपरेशन के लिए जा रहा था।

अपने दोस्तों की कार्यवाहियों से बेखबर साबिर अकेला खिड़की के पास बैठा बाहर की तरफ देख रहा था। चीजें पीछे भागती दिख रही थीं, जबकि हकीकत में ट्रेन आगे की तरफ जा रही थी। कार्यवाही एक ही थी, लेकिन कितना अजीब है एक ही चीज को दो तरह से महसूस करना।

साबिर के हाथ में मोबाइल था और वह गैलरी में सेव्ड फोटोग्राफ्स को देख रहा था।

तभी व्हाट्स ऐप् के एक मैसेज ने उसे हैरान कर दिया। एक अन्जाने नम्बर से यह मैसेज आया –

"अस्सालाम अलैकुम"।

पहचाना मुझे?

साबिर ने जवाब टाइप किया,

वालेकुम अस्स्लाम!

भाई साहब मैंने आपको नहीं पहचाना। चूँकि मैसेज पुरूष या महिला किस की ओर से आया है।

यह पता नहीं होने की स्थिति में प्रेषक को भाई साहब लिखना साबिर को उचित लगा इस लिए उसने भाई साहब शब्द से सम्बोधित किया।

फिर जवाब आया।

"हया"

मैं हया हूँ।

क्या अब भी नहीं पहचाना?

उसने फिर जवाब दिया :

भला कैसे नहीं पहचानूँगा।

पूछाः कैसी हैं आप?

अच्छी – हया ने लिखा और साबिर को सेण्ड कर दिया।

ट्रेन स्टेशन छोड़ चुकी थी और तीव्र गति से अपनी मंजिल की ओर बढ़ रही थी। ट्रेन ज्यों ही पंजाब से बाहर निकली साबिर के मोबाइल ने काम करना बन्द कर दिया, लेकिन साबिर बार–बार मोबाइल का नेटवर्क चेक करता रहा।

जब कहीं नेटवर्क आता वह हया का नम्बर चेक करता कि फिर कोई मैसेज तो नहीं आया, लेकिन उसे हर बार मायूसी ही हाथ लगती, क्योंकि हया का स्टेटस ऑफ लाइन प्रदर्शित कर रहा था।

इस दौरान उसके ज़ेहन में पुरानी बातें फिल्म के फ्लैशबैक सीन की तरह शुरू हो गई थी।

हया साबिर के दोस्त शमीम की दूर की रिश्तेदार थी जो बसन्तनगर (सिवान) में रहती थी। शमीम का घर भी उसी के मोहल्ले में था।

साबिर सारयाँ, गोपालगंज (बिहार) का रहने वाला था। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद साबिर ने आगे की पढ़ाई के लिए डी.ए.वी. कॉलेज सिवान में दाखिला ले लिया, चूँकि वह लोकल एरिये का रहने वाला था, इसलिए उसे कॉलेज के होस्टल में जगह नहीं मिल सका। इसी वजह से वह एक प्राइवेट लॉज में रहकर पढाई करने लगा।

साबिर की दोस्ती भी शमीम से इसी दौरान हुई थी। शमीम भी साबिर का क्लास मेट था और दिन में ज्यादा समय एक साथ व्यतीत करने की वजह से दोनों की दोस्ती गहरी होती चली गई।

वह दिन साबिर की जिन्दगी का सबसे अहम दिन था, जब शमीम साबिर के लॉज पर आया।

उस समय साबिर अपने बेड पर पडा किताब व नोटबुक फैलाए अपनी पढ़ाई में व्यस्त था।

क्या बात है, बहुत पढाई हो रही है, शमीम ने कमरे में घुसते ही साबिर से पूछा।

यार! अभी एग्जाम होंने में काफी समय बाकी हैं और तुम अभी से क्यों पागल हुए जा रहे हो? शमीम ने साबिर के बेड पर बैठते हुए कहा साबिर भी शमीम को देखकर मुस्कुराते हुए बोला यार तुम्हारी तो तैयारी हो चुकी हैं मैं भी कौन सा हमेशा पढ़ता हूँ।

आज बस थोडी फुरसत थी तो सोचा क्यों ना कॉलेज के पुराने लेक्चर फेयर कर लिए जाएँ।

छोड़ो यार लेक्चर और पढ़ाई चलो मेरे अंकल के यहाँ चलते हैं सिर्फ एक घण्टे में वापस लौट आएंगे।

साबिर अपने दोस्त की बात टाल नहीं सका इसलिए पढ़ाई छोड़कर जल्दी से तैयार होने लगा और दोनों निकल गए। दोनों पैदल चलते हुए ईधर–उधर की बातें करते हुए अंकल के घर कब पहुँच गए पता ही नहीं चला।

शमीम ने डोरबेल बजाया तभी एक लड़की ने दरवाजा खोला और सलाम करते हुए अन्दर आने के लिए कहा। शमीम ने साबिर को परिचय कराने के अन्दाज में बताया कि, ये मेरी कजन "हया" है, इसने इसी साल मैट्रिक की परीक्षा दी है। हया इन बातों को नहीं सुन सकी, वह अन्दर जा चुकी थी। वह दोनों भी अन्दर दाखिल हो गए।

वहां शमीम की आन्टी और हया की दानों बड़ी बहने रज़िया और सबा एक बड़े से बेड पर बैठी हुई थी। शमीम ने सबको सलाम किया। साबिर भी शमीम की नकल करते हुए सबको सलाम किया। शमीम ने सबसे पहले उन लोगों से

साबिर का परिचय कराया। ये मेरा क्लासमेट और दोस्त साबिर है।

आगे शमीम ने कहा आप हैं – "सबा अपी" इनका ग्रेजुएशन इसी साल कम्पलिक्ट हुआ है। ये रज़िया अपी कहलाती हैं, ग्रेजुएशन सेकेण्ड ईयर। अन्त में यह मोहतरमां है "हया जी" जो कि, हमेशा किताबों के साथ दीमक की तरह लगीं रहती हैं।

इनकी मैट्रिक की परीक्षा अभी एक हफ्ता पहले ही समाप्त हुई है। मेरे अंकल डॉ. मुजीब के नाम से जाने जाते हैं। फिर यह मेरी आन्टी हैं–निहायत ही नेक खातून और कुल मिलाकर यह है, मेरे अंकल का छोटा सा परिवार और एक प्यारा सा संसार।

हया ने पूछा – साबिर आप भी डी.ए.वी. कॉलेज में ही पढ़ते हैं। साबिर ने सबकी तरफ मुखातिब होते हुए अपने बारे में बताया।

मैं यहीं शमीम के साथ डी.ए.वी. कॉलेज में ही इन्टर फस्ट ईयर में पढ रहा हूँ। बातों का सिलसिला शुरू हो चुका था, आन्टी ने साबिर से पूछा –

बेटा तुम रहते कहाँ हो?

जी आन्टी मैं यहाँ पड़ोस की कॉलोनी के अहमद लॉज में रहता हूँ। साबिर ने जवाब दिया।

वैसे रहने वाले कहाँ के हो? हया की आन्टी ने फिर पूछा।

जी आन्टी मेरा घर गोपालगंज जिला में पड़ता है।

बेटा तुम शमीम के दोस्त हो, इसलिए मेरे लिए तुम शमीम जैसे ही हो जब भी कोई परेशानी हो या हमारी ज़रूरत हो तो हमें ज़रूर बताना और इसे अपना ही घर समझना।

जी आन्टी साबिर ने कहा।

तभी हया तीन कप चाय एक ट्रे में लेकर आयी। आन्टी ने कहा लो बेटा चाय लो। बहुत अच्छी चाय बनाती है मेरी हया।

चाय पीने के बाद साबिर ने शमीम को चलने का इशारा किया, फिर दोनों जल्दी ही खड़े हो गए।?

शमीम ने कहा : अच्छा आन्टी चलते हैं।

ठीक है आते रहना तुम तो एक बार जाते हो तो आना ही भूल जाते हो और हाँ साबिर बेटा तुम भी आते रहना।

ज़रूर आन्टी दोनों ने एक साथ कहा और सलाम करके चल दिए।

हया के घर से निकलने के बाद शाम हो चुकी थी इसलिए शमीम ने अपने घर का रूख किया और इधर साबिर ने अपने लॉज का।

साबिर को बडा अच्छा लग रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था चलो यहाँ कोई अपना तो मिल गया। कितनी रौनक थी उस घर में? वास्तव में बड़ा अच्छा लगा था। साबिर को शमीम के अंकल के घर जाकर।

साबिर को कोई चीज बार–बार याद आ रही थी, वह थी हया। कितनी खास थी ना वह उस घर में, अपनी बहनों

नज़राना

किशोरावस्था में साबिर ने हया को चाहा लेकिन फैमिली स्टेटस में अन्तर के चलते अपने प्यार का इज़हार नहीं कर सका। उम्र की चौथी दहाई में छत्तीसगढ़ के खूंरेज माहौल ने मोहब्बत की नई कहानी में रंग भरे, साथ दिया सोशल मीडिया व्हाट्सअप ने और मोहब्बत की आग को हवा दिया उम्र के इस पड़ाव में पति पत्नी के लड़खड़ाते रिश्ते ने, आगे भारतीय संस्कृति के प्यार ने जन्म दिया इस नज़राने को.....

लेखक से सम्पर्क हेतुः
alifiroz574@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-47-0
9 788119 927470